कृषि के विकास में राजयोग की भूमिका

1. हम जैसा सोचते हैं वैसा ही करते हैं और धीरे–धीरे हम वैसे ही बन जाते हैं, इसलिए कहा जाता है कर्म के बीज संकल्प ही हैं। आप के संकल्पों से चारों तरफ का वायुमण्डल बनता है। वायुमण्डल फिर सबको प्रभावित करता हैं जैसे कि हम शास्त्रों में वर्णित अनेक कथाएं सुनते आये हैं। जिसमें किसी राजा को बच्चा नहीं था, अमुक ऋषि ने उनको एक फल दिया, जिसको खाने से उनको पुत्र प्राप्ति हुई, यह पॉवर उस फल की नहीं थी, अगर फल में वह शक्ति होती तो उस पेंड़ के फल जो भी खाता, उसे भी बच्चे की प्राप्ति होती, पर ऐसा तो नहीं था। यह शक्ति ऋषि के संकल्पों की थी, जिसे उन्होंने उस फल में भर दी थी। **दूसरी बात** हमारे संकल्पों का प्रभाव हमारी कर्मेन्द्रियों द्वारा प्रवाहित होता रहता है, जैसे एक बार शेषनाग के बीमार होने पर अनेक वैद्यों ने अनेक दवाइयों का प्रयोग करके भी कुछ राहत नहीं दे पाये, तब धनवन्तरि जी को बुलाया गया, तो उन्होंने ठीक से देखा तो दवाइयां तो सब ठीक थीं पर फायदा क्यों नहीं हो रहा है, तब उन्होंने कहा कि अब जब शेषनाग को दवाई देना तो उनकी आंखों पर पट्टी बांधकर देना, वही दवाइयां तुरन्त असर करने लगीं कारण क्या था? शेषनाग जी की आंखों द्वारा निकलता हुआ विष दवाइयों को जहरीला बना देता था। **तीसरा** हमारी मानसिकता का प्रभाव हमारी हर चीज पर पड़ता है। इसी के अन्तर्गत हम **नानक जी** के जीवन की एक कथा देखें, एक बार उन्हें किसी बड़े व्यापारी ने अपने घर में भोजन ग्रहण करने का आग्रह किया, जिसे नानक जी ने ठुकरा दिया, वहीं एक गरीब किसान के यहां भोजन करने की इच्छा जताई। जब वे भोजन कर रहे थे तब वही सेठ जब वहां पहुँचता है, तब नानक जी वहां सूखी रोटी खा रहे थे, तब सेठ ने उन पर हंसी कर टिप्पणी की, तब नानक जी ने सेठ से अपनी रोटी लाने के लिए कहा, उसके रोटी लाने पर नानक जी ने उसकी रोटी पकड़ कर ऐंठा, जिससे खून निकलने लगा और उस किसान की रोटी को जब निचोड़ा तो उससे दूध निकलने लगा। तब नानक जी ने कहा तुम गरीबों का खून चूसकर धन कमाते हो, इसलिए तुम्हारे भोजन से तुम्हारी मानसिकता दिखती है। **चौथा** है हमारा भाव। इतिहास की एक घटना है हरिदास जी का गायन सुनकर अकबर ने तानसेन से फिर से वही राग सुनने की इच्छा प्रकट की, पर हरिदास जी अकबर के बुलाने पर भी नहीं आये, तो उन्होंने वही राग तानसेन से सुनाने की बात रखी, तो तानसेन के राग में वह कशिश नहीं लगी, तब तानसेन जी से कारण पूछा, तो उन्होंने बड़ी बेबाकी से जवाब दिया, कि जहांपनाह मैं आपके हुकुम का बन्दा हूं मेरे गुरू ईश्वर के लिए गाते हैं उनके प्रति उनके दिल की भावनायें ही उनका राग हैं। **पांचवां**– हमारी भावना, जैसे संगीत पहले सुर साधना हुआ करता था, जिसका प्रतिफल देख सकते है कि तानसेन जी राग–मल्हार गाते थे तो मेघ अपनी खुशी बारिश से करने लगते थे, दीप राग गाते थे तो बुझे दीपक रोशन हो जाते थे, पुष्प खिलकर भौंरे बुला लेते थे, आज भावना व्यवसाय की है, इसलिए नित नये वाद्ययन्त्र भले आते जायें, पर संगीत में वो रस कहाँ, वह पावर कहाँ, **छठा**– हमारी वृति का

प्रभाव, हमारी वृति जैसी होगी वायुमण्डल वैसा ही बनेगा, पहले के ऋषि जंगल में छोटी सी झोपड़ी या गुफा में तपस्या करते थे, कभी किसी जंगली जानवर से उनकी साधना में विघ्न पड़ा हो, किसी को शेर ने अपनी भूख मिटाने के लिए मार डाला? कभी नहीं सुना क्यों? क्योंकि ऋषि की वृति में हरेक जीव जन्तु के प्रति भी दया–करूणा–रहम की वृति होने के कारण, शेर भी बकरी के माफिक उनकी कुटिया पर आकर बैठते थे और चले जाते थे। उनकी वृति ने कुटिया के चारों ओर वृतानुसार पवित्र वायुमण्डल बना रखा था। **सातवाँ** हमारी वृति, टोटल जीवन, किसी भी आश्रम में जाकर देखो वहाँ के पेड़ पौधे बिना किसी खास देख रेख के ही बड़े सुन्दर व स्वस्थ रहते हैं। जगदीश चन्द्र वसु द्वारा यह पहले ही सिद्ध हो चुका है कि पेड़–पौधे भी हमारी भावनाओं को ठीक तरीके से सुनते हैं, समझते हैं। उसके बाद तो अनेकों प्रयोग होते गये । दक्षिणी महासागर के पास **सोलोमन टापू** पर जब किसी पेड़ को कुल्हाड़ी से नहीं काटा जा सकता है तब लोग इकट्ठा होकर एक साथ उस पेड़ के पास जाकर कहते है कि **सूख जा– सूख जा** और तीस दिनों की उनकी अभिषप्त आवाज सुनकर वह पेड़ सूख कर गिर जाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं वनस्पति के जादूगर **''ल्यूथर बरबंक''** जिन्होंने अपने घर में पूरा एक बगीचा लगा रखा था, जिसमें वह पेड़–पौधों को बच्चों की तरह स्नेह देकर पालते थे, उनसे बाकायदा बात करते थे जिसका नतीजा जो अखरोट 32 वर्षो में फल देना शुरू करता है, वह उनके बगीचे में 16 वर्ष में फलीभूत होने लगा, जो पेड़ 28 वर्ष में फलते हैं वे 14 वर्ष में फल देने लगे। उन्होंने गुलाब से बात करके कहा कि तुम इतने अच्छे हो, फिर नाराज होकर अपने ऊपर कांटे क्यों उगाते हो? तुम्हारी सुरक्षा के लिए हम हैं ना, इसका प्रभाव थोड़े दिनों में वह गुलाब के पौधे कांटे रहित हो गये। एक व्यक्ति उनके बाग से कैक्टस की बाड़ लेने आया, तो उन्होंने उसे काटने से मना कर दिया, और स्वयं काटने गये और उसे पहले बड़े प्यार से सहलाया फिर कहा हम तुम्हें काट थोड़े ही रहे है हम तुम्हारी वंश वृद्धि के लिए तुम्हें स्थान्तरित कर रहे हैं। तुलसी की पत्ती लेने के लिए भी वह यही कहते थे कि पहले स्वीकृति लो, कि मां तुम्हारे पास तो अथाह भण्डार है उससे कुछ पत्तियॉ हम औषधि के लिए आप से लेना चाहते हैं। तो वह पत्तियॉ हमें रोगमुक्त कर देगी। कई बार क्लासिकल संगीत और पॉप संगीत का प्रयोग भी पेड़ पौधों पर करके देखा जा चुका है। क्लासिकल संगीत सुनकर पौधों का विकास, उनकी पत्तियॉ व फल पश्चिमी संगीत के पास वाले पौधे से जमीन आसमान का फर्क पाया गया।

2. ऐसे ही भोजन के लिए कहा जाता है, जैसा अन्न वैसा मन, और जैसा मन वैसा अन्न। जिसका प्रभाव होटल के भोजन में, घर के भोजन और मंदिर के भोजन में साफ देखा जा सकता है। तीनों स्थान पर फर्क चीजों का नहीं है, फर्क सिर्फ मानसिकता का है। जो उनकी गुणवत्ता को कम ज्यादा कर देता है। ठीक इसी प्रकार हम अपने भारत के इतिहास में पढ़ते आये हैं कि, यहॉ सोने चांदी के महल थे, घी–दूध की नदियॉ बहती थीं, शेर और गाय एक घाट पानी पीते थे, सात्विक प्रवृत्ति के लोग थे इसलिए सतोप्रधान प्रकृति थी। इसलिए यह

सम्पन्नता दर्शाती है और यह सम्पन्नता जरूर कृषि के माध्यम से ही थी, उस समय कोई शेयर बाजार,कम्पनियॉ या फैक्टरी का उत्पादन तो था नहीं। मानव निर्मित चीजें मानव को मानव से जोड़ती थी। जिससे मानव का मानव से सामाजिक सम्बन्ध परिवार के माफिक था, जिससे वायुमण्डल प्रेम–प्यार–सहयोग, ईमानदारी से भरपूर था। जिसका असर पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों में भी दिखता था जिससे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा–छल–कपट, मानव तो क्या पशु–पक्षियों की चेतना से भी परे था। शेर जैसे जानवर में भी हिंसक वृति का नाम निशान नहीं था। जिसका गायन हम गर्व के साथ हर भारतीय करते हैं।

3. राजयोग भी एक विज्ञान है जो मानव के मन की बीमारियों को अति सूक्ष्मता से पता लगाकर उन्हें समूलतः नष्ट कर, चित्त को पॉवरफुल बनाता है, न सिर्फ पॉवरफुल बनाता है बल्कि सुपर पॉवर से कनेक्ट कर उससे भी शक्तियॉ ग्रहण करने की विद्या बता देता है। जिससे मन स्वच्छ, बुद्धि–विशाल संस्कार सरल एवं श्रेष्ठ होने लगते हैं, जिससे जीवन सन्तुष्ट एवं सुखी हो जाता है। जिसका प्रभाव सम्बन्धों एवं आस–पास जड़ एवं चेतन पर तो पड़ता ही है साथ–साथ पर्यावरण जगत को भी काफी प्रभावित करता है। यह राजयोग का विज्ञान भी अगर कृषि में शामिल कर लिया जाये, तो उसका सीधा असर अनाज की क्वालिटी एवं क्वान्टिटी दोनों पर बहुत अधिक पड़ेगा। जो रसायन फसल की पैदावार को बढ़ाने व कीड़ों से बचाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं उनकी आवश्यकता ही शायद न पड़े। जैसे एक बच्चे को उसकी मां बड़े प्यार से पालती है और एक बच्चा क्रेश में पलता है। क्रेश में बच्चे को वैराइटी, साधन व खिलौने तो मिलेंगे पर जो स्नेह, प्यार–पुचकार की निर्मल गोद बच्चे को चाहिए वह सानिध्य नसीब नहीं होता, इसलिए बच्चा बड़ा तो हो जाता है और बुद्धि का विकास भी कर लेता है, पर उसका ज्यादातर उपयोग विध्वसंकता एवं उपद्रवी कामों में ही करता है। इसी प्रकार कृषि में पैदावार तो बढ़ जाती है, पर उसकी जो सतोप्रधानता थी, जो अनाज से पोषक मिलता था वह समाप्त हो गया। पहले लोग सिर्फ भोजन खाकर स्वस्थ रहते थे, आज दूध में भी कुछ अलग डालकर पीने पर भी शक्ति महसूस नहीं करते। जिस प्रकार मिट्टी में नये–नये केमिकल्स का प्रयोग कर पौधों के आकार व फलों को जल्दी बड़ा व अधिक मात्रा में जल्दी ही बढ़ा दिया जाता है। इसी कारण आजकल के बच्चों का शरीर भी समय से पहले ही मोटा, बड़ा व असमय बीमार हो जाता है और उनकी चेतना की पॉवर शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण असमय व अनचाही बीमारियों से ही लड़ती रहती है।
4. जो उत्तम खेती का नारा हम सुनते आये, उसके कहने का भाव यही था कि खेती से ही न सिर्फ सारे संसार का जीवन निर्वाह होता था, बल्कि जीवन को उत्तम भी बनाया जाता था। जिससे पैदा करने वाले का जीवन दुआओं का पात्र एवं संन्तुष्ट होता था। परन्तु आज हर चीज का व्यवसायीकरण होने के कारण जीवन भी व्यवसाय बनता जा रहा है। व्यक्ति सुधरने से अच्छा मर जाना चाहता है, पश्चाताप की जगह प्रतिशोध की ज्वाला जलाता है

जिसमें स्वयं अपने जीवन को नष्ट करता जा रहा है या अपना ही अपहरण करवा रहा है। जीवन का उद्देश्य वन नम्बर जीवन नहीं, किसी भी नम्बर के किसी भी तरह से जीना हो गया है। आज न लोगों की कमी है न साधनों की, न धन की, न शिक्षा की कमी है फिर भी लोगों के कहने में यहीं सुनाई देता है कि पहले वाला जमाना थोड़े ही है। तो क्या चीज कम हो गयी ,जीवन से मूल्य खत्म हो गये। जिससे हर चीज का पतन हो गया है।

5. राजयोग जीवन से लुप्त हुए मूल्य फिर से जागृत करता है। जिससे व्यक्ति के अन्दर से धन की लालसा समाप्त होती है, अपनी इच्छाओं के पीछे नहीं भागता, जिसके कारण किसी के भी जीवन को खतरा नहीं पहुंचाता। आज कल जो इंजेक्शन लगाकर सब्जियों को अधिक व जल्दी उगाने की अंधी दौड़ जो चल रही है राजयोग ऐसे कर्म करने को बचाता है। क्योंकि यह कर्म अनेकों का जीवन नष्ट कर अभिशप्त कर देता है। खुशी छीन लेता है। राजयोग तो खुशियों का द्वार खोलता है। राजयोग सिद्धान्त विहीन जीवन को मूल्यों एवं मर्यादाओं से सजाता है। जिससे मन में शान्ति, पवित्रता, कर्म में श्रेष्ठता व कुशलता आती है। जीवन में खुशी व सन्तुष्टता आती है। जिसका सबसे अधिक प्रयोग कृषि में करके कृषकाय कृषि को कृष्णकाय बनाया जा सकता है। इससे न सिर्फ कृषि का विकास होगा बल्कि मानव में नई स्फूर्ति व दिव्यता व मूल्यों का विकास होगा। जन जीवन खुशहाल होगा। जिससे भारत भूमि फिर से स्वर्ग कहलायेगी।

ब्र0 कु0 सुमन

जानकीपुरम लखनऊ